रिकार्ड– तूने रात गंवाई सो के.....ओमशांति प्रातःक्लास 22–3–67
यों यह गीता है भक्तिमार्ग की। सारी दुनियां में जो गीता गाते हैं वा शास्त्र पढ़ते हैं ,तीर्थों पर जाते हैं यह सभी हैं भक्तिमार्ग के। ज्ञानमार्ग किसको कहा जाता है,भक्तिमार्ग किसको कहा जाता है यह तुम बच्चे ही जानते हो। वेद–शास्त्र उपनिषद आदि सब हैं भक्ति। आधा कल्प भक्ति चलती है और आधा कल्प फिर ज्ञान की प्रारब्ध मिलती है। भक्ति करते2 उतरना ही है। उसको कहा जाता है उतरती कला। 84जन्म लेने पड़ते हैं। फिर एक जन्म में तुम्हारी चढ़ती कला होती है। इसको कहा जाता है ज्ञान मार्ग। ज्ञान के लिए गाया हुआ है एक सेकेंड में जीवनमुक्ति। रावणराज्य जो कि द्वापर से चलता आता है वो वो खतम होकर फिर रामराज्य स्थापित होता है। यह ड्रामा में 84जन्म पूरे हैं। फिर चढ़ती कला से सबका भला होता है। यह (अक्षर कहां कहां) किसी शास्त्र में हैं। सबकी चढ़ती कला सर्व का भला। सर्व की सदगति करने वाला तो एक है। बाप है ना। सन्यासी उदासी तो अनेक प्रकार के हैं। बहुत मत मतान्तर .....शास्त्रों में लगा हुआ है कि कल्प की आयु लाखों वर्षों की है। अब शंकराचार्य की मत निकली 10000.....। कितना फर्क हो जाता है। कोई फिर कहेंगे इतने हजार वर्ष।अनेक मनुष्य ,अनेक धर्म, अनेक मतें हैं।सतयुग में होती ही है एक मत। यह बाप बैठ तुम बच्चों को सृष्टि की आदि,मध्य,अंत की नालेज देते हैं। (इसे) सुनाने में भी कितना समय लगता है। सुनाते ही रहते हैं। ऐसे नहीं कह सकते हैं कि पहले (क्यों) नहीं यह सब सुनाया?स्कूल में पढ़ाई नम्बरवार होती है ना। छोटे बच्चे के आर्गन्स छोटे हैं तो उसको.....सिखाया जाता है। फिर जैसे2 आर्गन्स बड़े होते जावेंगे तो बुद्धि का ताला खुलता जावेगा। पढ़ाई धारण करते जावेंगे। छोटे बच्चे की बुद्धि में तो कुछ धारण हो नहीं सकता है।बड़ा होता है तो फिर वो ही बैरिस्टर,जज आदि बन जाता है। इसमें भी ऐसे ही है। कोई की बुद्धि में धारण अच्छी रीति होता है।बाप कहते हैं मैं आया हूँ पतित से पावन बनाने। तो अब पतित दुनियां से वैराग आना चाहिए।आत्मा पावन (बने) तो पतित दुनियां में रह ही ना सके। पावन दुनियां में मनुष्य भी पावन हैं।पतित दुनियां में पतित मनुष्य ही (रहते) हैं। यह है ही रावण राज्य। यथा राजा–रानी.. .....यह सारा ज्ञान है बुद्धि से समझने का। समझो शंकराचार्य को मान देकर उपर में बिठाया है। बुद्धि में यह खयाल है कि हम पार्ट बजाते हैं। यों वो है तो सर्प मिसल ; क्योंकि बाप से उनकी विपरीत बुद्धि है अर्थात् दुश्मनी बुद्धि है। ...परमात्मा को सर्वव्यापी कह देते हैं। उल्टी ही बात बोल देते हैं तो विपरीत बुद्धि हुई ना। इस समय सबकी है बाप से विपरीत बुद्धि। तुम बच्चे तो बाप को याद करते हो। अंदर में बाप के लिए प्यार भी है।आत्मा में बा पके लिए प्यार है ;क्योंकि अब बाप को जाना है ,पहचाना है।बाबा ने कल भी समझाया है कि क्लीयर कर लिखना चाहिए कि वो तो कृष्णोवाच गीता है। यह शिव भगवानोवाच गीता है। कृष्ण की बनाई हुई गीता नर्कवासी बनाती है।शिव के द्वारा सुनी हुई गीता से स्वर्गवासी बनते हैं। वो गीता गाई जाती है।यहां पर तुम सम्मुख शिवबाबा से सुन रहे हो। तुमको पहले दोनों का आक्युपेशन अलग2 लिखना चाहिए। कृष्ण की महिमा और शिव की महिमा अलग2, बाबा वाणियों में ढेर युक्तियां देते रहते हैं। चित्र बनाने वाले सुनते तो हैं। अगर सुनेंगे ही नहीं तो वो चित्र बना कैसे सकेंगे? तो शिवबाबा की भी फुल महिमा लिखावो मनुष्य सृष्टि का बीजरूप ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर। आनन्द का सागर लिखकर फिर आपस में सब मिल कर देखो कि सारी महिमा आ गई है?कृष्ण की और शिव की अलग2 लिखो।इस गीता पर शिव का चित्र उस पर कृष्ण का चित्र हो। ज्ञान सागर गीता ज्ञान दाता त्रिमूर्ति शिव परमात्माये..... ।त्रिमूर्ति अक्षर जरूर डालना है ;क्योंकि त्रिमूर्ति का तो ज्ञान है ना ब्रह्मा द्वारा स्थापना।तो जरूर .....ब्रह्मा द्वारा ही ज्ञान सुनावेंगे ना। कृष्ण तो ऐसे नहीं कहेंगे ना कि शिव भगवानोवाच। प्रेरणा से भी कुछ होता नहीं है। ना उनमें शिवबाबा की प्रवेशता ही हो सकती है। शिवबाबा तो पुराने देश में आते हैं। . .....तो दोनों की महिमा

अलग2 हो। शिवबाबा की गीता से सदगति।दोनों गीतायें (बोर्ड) पर बनाओ। बहुत बड़ा बोर्ड हो कि मुख्य बात ही यह है। सबसे बड़ा बोर्ड इसका होना चाहिए। सतयुग में गीता तो कोई पढ़ते ही नहीं हैं। भक्ति मार्ग में जन्म जन्मांतर पढ़ते हैं। तो फिर ज्ञानमार्ग में भक्ति होती नहीं है। भक्तिमार्ग के जो भी शास्त्र हैं वो तो वो ही पढ़ते हैं। यह ज्ञान की है बिल्कुल नई बातें। वो भक्ति है अनेक प्रकार की। यह है ज्ञान। जिसके लिए तो वो कहते है कि रचता और रचना के ज्ञान को हम नहीं जानते हैं।शास्त्रों में भी तो लगा हुआ है कि ऋषि–मुनि आदि स नेति2 करते ही गये हैं। अब तुम बच्चों को बाबा बता रहे हैं। भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ते2 गिरते ही आये हैं। भक्तिमार्ग में ज्ञान की बातें होती ही नहीं हैं। अब रचता बाप ही रचना की आदि,मध्य, अंत का ज्ञान देते हैं। मनुष्य तो रचता हो नहीं सकते हैं। मनुष्य कह नहीं सकते हैं कि मैं रचता हूँ।बाप खुद कहते हैं कि मैं सृष्टि का बीजरूप हूँ। मैं ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर ,सर्व की सदगति दाता हूँ। कृष्ण की तो महिमा ही अलग है। तो वो पूरा कान्ट्रास्ट लिखना चाहिए। वो इनकी महिमा यह इनकी महिमा। ऐसा बनाना चाहिए जो कि मनुष्य देखने से ही समझ जाये कि गीता का ज्ञान दाता कृष्ण नहीं है। इस बात को ही सिद्ध कर .....। तब तो तुमने जीत पहन ली। एक गीता झूठी सिद्ध करने से सब शास्त्र झूठे हो जाते हैं। इसलिए गाया जाता है झूठ मिरई झूठ ।सिवाय ज्ञान की बातों के सब झूठ ही है। शास्त्रों में है ही सब भक्ति की (बातें)। कृष्ण के पिछाड़ी हैरान होते हैं। .....शिव के भक्त शिव पर गला काटने को तैयार हो जाते हैं।बस हमको तो शिव पास ही जाना है। वैसे ही वो समझे कि हमको तो कृष्ण पास जाना है तो जा नहीं सकते हैं। कृष्ण पर बलि चढ़ने की बात नहीं होती है। देवियों पर बलि चढ़ते हैं। देवताओं पर कब बलि नहीं चढेंगे।देवियों पर बलि चढ़ते हैं। तुम देवियां हो ना। तुम शिवबाबा के बने हो। तुम शिवबाबा पर भी बलि चढ़ते हो।देवियों पर भी बलि चढ़ते हो। शास्त्रों में तो हिंसक बातें लिख दी हैं। तुम तो शिवबाबा के बच्चे हो।तन,मन,धन से बलि चढ़ते हो। और कोई बात नहीं। इसलिए सिर्फ शिव और देवियों पर बलि चढ़ते हैं। अभी सरकार ने शिवकाशी में बलि चढ़ना बंद कर दिया है। अभी तो वो.....ही नहीं है। बाकी आत्मघात करने लिए तो मनुष्य बहुत उपाय लेते हैं अर्थात् अपने साथ शत्रुता करने के अनेक उपाय हैं। मित्रता का एक ही उपाय है जो कि बाप बताते हैं।भक्तिमार्ग में जीवात्मा अपना शत्रु है। ज्ञानमार्ग में जीवात्मा अपना ही मित्र है। बाप आकर ज्ञान देते हैं.....तो जीवात्मा अपना मित्र बनती है। आत्मा पवित्र बन बाप से वर्सा लेती है। संगमयुग पर हर एक आत्मा को बाप आकर मित्र बनाते हैं।आत्मा अपनी मित्र बनती है। श्रीमत मिली है तो हम समझते हैं कि बाप की मत पर ही चलेंगे। अपनी मति पर आधा कल्प चलकर दुर्गति को पाया है।अभी श्रीमत पर चलकर सदगति को पाना है। तो इसमें अपनी ही मत चल नहीं सकती है। बाप तो सिर्फ मत देते हैं कि तुम देवता बनने आये हो ना। यहां अच्छा कर्म करेंगे तो दूसरे जन्म में अच्छा फल मिलेगा। अमरलोक में। यह तो है मृत्युलोक। यह राज तो तुम बच्चे ही जानते हो। सो भी तो नम्बरवार ही जानते हो।कोई की बुद्धि में अच्छी रीति धारण होती है।कोई धारण नहीं कर सकते हैं तो इसमें टीचर क्या करेंगे?टीचर से कृपा वा आशीर्वाद मांगेंगे क्या?टीचर तो पढ़ाकर अपने घर चले जाते हैं। स्कूल में पहले2 आकर खुदा की बंदगी करते हैं कि खुदा हमको पास कराना तो हम भोग लगावेंगे।टीचर को कब नहीं कहेंगे कि आशीर्वाद करो। इस समय यह बाप भी है तो टीचर भी है। बाप की आशीर्वाद तो अंडरस्टुड ही है ना।बाप बच्चे को चाहते हैं।बच्चा आवे तो उसको धन देउं। तो यह आशीर्वाद ही हुई ना। यह एक कायदा है। बच्चे को बाप से वर्सा मिलता है। .....बच्चे भी अब तो तमोप्रधान बनते जाते हैं।

तत्व भी तमोप्रधान दुःख देने वाले हैं। यह है ही दुःखधाम। 40हजार वर्ष अभी भी बाकी आयु हो तो क्या हाल होगा?मनुष्यों की बुद्धि बिल्कुल ही जैसे कि मारी गई है। बाप के साथ योग रखें तो आत्मा में रोशनी भी आवे। योग में ना रहने कारण ही अंधेरा हो गया है। इसीलिये बच्चों को बाप कहते हैं (जितना) याद में रहेंगे उतनी ही लाइट बढ़ती जावेगी। जैसे पेट्रोल का निशान रहता है ना। यह भी (मीटर) है। याद से आत्मा प्योर बनती है। लाइट बढ़ती जाती है। याद ही नहीं करेंगे तो लाइट भी तो मिलेगी नहीं। याद से लाइट वृद्धि को पावेगी। याद ना किया और कोई विकर्म कर लिया तो लाइट कम होती जावेगी। तुम पुरुषार्थ करते हो सतोप्रधान बनने का। यह बहुत समझने की बातें हैं। याद से ही तुम्हारी आत्मा पवित्र होती जावेगी। तुम लिख भी सकते हो।यह रचता और रचना का ज्ञान श्रीकृष्ण दे नहीं सकते हैं। उसमें ज्ञान है ही नहीं। वो तो है प्रारब्ध। कृष्ण तो पूरे 84जन्म लेते हैं। यह भी लगा देना चाहिए कि अंतिम 84वें जन्म में कृष्ण फिर से ज्ञान ले रहे हैं। फिर फर्स्ट नम्बर में जाते हैं। बाप ने यह भी बताया है कि सतयुग में 9लाख ही होंगे तो फिर वृद्धि तो होगी ही ना।दास–दासियां भी ...ही होंगे ना। जो पूरे 84 जन्म लेते हैं। कहेंगे इन्होंने पूरे 84जन्म लिये हैं। 84जन्म ही गिने जाते हैं। जो अच्छी रीति परीक्षा पास करेंगे वो तो पहले2 ही आवेंगे। जितना देरी से जावेंगे तो मकान को पुराना तो कहेंगे ना।नया मकान बनता है फिर दिन–प्रतिदिन आयु कम होती जावेगी। कोई नया मकान बनावे तो कहेंगे कि 2–3वर्ष तक चलेगा। आखरीन वो मकान तो सड़ जाता है ना। वहां तो सोने के महल बनते हैं। वो तो पुराना हो नहीं सकता है। सोना तो सदैव ही चमकता होगा। फिर भी साफ जरूर करना पड़ेगा। जेवर भल सच्चे सोने का बनाओ आखिर साफ करना पड़ ही जाता है। फिर उनको पालिश चाहिए। तुम बच्चों को सदैव यही खुशी होनी चाहिए कि हम तो नई दुनियां में जा रहे हैं। इस नर्क में यह अंतिम जन्म है। इन आंखों से जो कुछ देखते हो जानते हो कि यह पुरानी दुनियां ,पुराना शरीर है। अभी हमको सतयुग नई दुनियां में नया शरीर लेना है। 5तत्व भी नये होते हैं। ऐसे2 अंदर विचार,सागर,मंथन चलना चाहिए।यह पढ़ाई है ना। अंत तक तुम्हारी यह पढ़ाई चलेगी। पढ़ाई बंद हुई तो विनाश हो जावेगा। तुमको स्टुडेंट अपने को समझकर उसी खुशी में रहना चाहिए ना। भगवान हमको पढ़ाते हैं। यह खुशी कोई कम थोड़े ही है ; परंतु यह भी जानते हो कि साथ2 माया भी उल्टा काम करवा देती है। 5–6 वर्ष पवित्र रहते हैं फिर माया गटर में डाल देती है। गंदा कर देती है।एक बार गिरे तो फिर वो अवस्था हो नहीं सकती है। हम गिरा हूँ फिर वो बार2 अंदर में आता है। अभी तुम बच्चों को सारी स्मृति रखनी है।इस जन्म में जो पाप किये हैं हर एक आत्मा को अपने जीवन का तो पता ही है ना। कोई मंदबुद्धि,कोई विशाल बुद्धि होते हैं। छोटेपन की सारी याद तो रहती है नां बाबा भी तो छोटेपन की ही हिस्ट्री सुनाते हैं ना। बुद्धि में याद आती है ना। बाबा को वो जगह आदि भी याद है ; परंतु अभी तो वहां सब नई ही जगह बन गई होगी। 5वर्ष से लेकर अपनी जीवन कहानी याद होनी चाहिए।अगर भूल गये हैं तो डल बुद्धि कहेंगे। बाबा कहते हैं कि अपनी जीवन कहानी लिखो।लाइफ की बात है ना। मालूम पड़ता है कि यह लाइफ में कितना चमत्कारी था। गांधी इन्दिरा आदि के कितने बड़े2 वैलयूम बनते हैं। लाइफ तो वास्तव में तुम्हारी वैल्युएबुल है ना। तुम लोगों के आगे तो और कितने बड़े2 वैलयूम बनते हैं। लाइफ तो वास्तव में तुम्हारी वैल्युएबुल है ना। तुम लोगों के आगे तो और कोई की भी लाइफ बर्थ नॉट एक पेनी है। तुम्हारी नज़र में तो वो कोई लाइफ ही नहीं है।वंडरफुल लाइफ यह है। यह है मोस्ट वैल्युएबुल। अमूल्य जीवन। इसकी वैल्यु कही नहीं जा सकती है। इस समय तुम बहुत सर्विस करते हो। यह ल.ना. तो कुछ भी सर्विस नहीं करते हैं। तुम्हारी लाइफ बहुत वैल्युएबुल है जबकि औरों की भी ऐसी जीवन बनाने सर्विस करते हो। वो गायन लायक होती है। वैष्णव देवी का भी मंदिर है ना। अभी तुम सब वैष्णव हो। मनुष्यों की तो यह भी बुद्धि नहीं चलती है कि सिर्फ एक ही वैष्णव

देवी होगी क्या?वैष्णव माना कि तुम पवित्र बनते हो। खान–पान भी वैष्णव है। पहले नम्बर विकार में तो तुम वैष्णव हो ना। जगतअम्बा की यह सब बच्चियां ब्र.कु. हैं ना। ब्रह्मा और सरस्वती। बाकी हैं सब उनकी सन्तान। नम्बरवार .....देवियां भी हैं। जिनकी पूजा होती है। बाकी इतनी भुजायें आदि जो दी हैं वो सब हैं फाल्तू। तुम बहुतों को आप समान बनाते हो तो भुजायें दे दी हैं। ब्रह्मा को भी 100भुजाओं वाला, हजार भुजाओं वाला दिखाते हैं। यह सब भक्ति मार्ग की बातें समझाई जाती हैं। फिर बाप कहते हैं कि दैवीगुण भी धारण करने हैं। किसको भी दुःख नहीं दो। उल्टा–सुल्टा रास्ता बताकर सत्यानाश नहीं करो। ....एक ही मुख्य बात समझानी चाहिए कि बाप और वर्से को याद करो। बैज पर समझाओ। बाबा ने समझाया है कि मेरे भक्तों को समझाओ। वो मिलेंगे मंदिरों में। शिव के मंदिर में। ....भक्त तुमको वहां ही मिलेंगे। तुम जानते हो कि आप ही पूज्य हो ,आप ही पुजारी (बने) हो। पुजारी ही फिर पूज्य होंगे। आदिदेव के मंदिर में भी तुम समझा सकते हो। ....यह प्रजापिता ब्रह्मा है तो प्रजा कहां है?तुम ब्र.कु.कु. अब प्रैक्टिकल में है। वो ब्राह्मण थोड़े कि हम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान हैं।वो कहेंगे ब्रह्मा भी होकर गया है। तुम तो कहेंगे शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा अभी हाजिर हैं। अजमेर में भी ब्रह्मा के मंदिर में तुम अच्छी रीति समझा सकते हो।प्रजापिता ब्रह्मा कहां है जिनकी तुम संतान हो। तुम तो विकारी हो। वो तो निर्विकारी है जिनको बाप नालेज दे रहे हैं। शिवबाबा ने रुद्र यज्ञ रचा है। ब्राह्मणों को पढ़ाते हैं। तुम्हारे पास प्रदर्शनी में भी बहुत आवेंगे। मंदिरों में भी बहुत सर्विस हो सकती है ;परंतु मंदिरों में सर्विस करने लिए कोई जाता नहीं है। मंदिरों में जाकर की गई सव्रिस का बाबा को समाचार लिखना चाहिए। फिर बाबा भी वाणी में समझाते तो (हैं) ना। सर्विस की (महिमा) बहुत है ;परंतु ऐसा समाचार मुश्किल (ही) कोई देते हैं। बैज पर (भी) जाकर समझाना चाहिए। प्रजापिता ब्रह्मा सो तो जरूर मनुष्य ही होगा ना। परमपिता परमात्मा ने ब्र.वि.शं. को रचा। तुम बच्चे जानते हो कि इनमें प्रवेश कर तुम बच्चों को ज्ञान दे रहे हैं। स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। यह.....सब बच्चे तो अच्छी रीति समझा नहीं सकेंगे। बाबा जानते हैं कि बहुत डल बुद्धि भी हैं। सर्विस करने वालों की और ना करने वालों की भेंट तो की जाती है ना। बाबा तो जानते हैं ना जो कि .....समझाय नहीं सकते हैं उनको। वो तो और ही ब्र.कु.कु. की आबरू गंवायेंगे। कोई कहते हैं हम (यहां) पर .....नहीं रहेंगे, इस सेंटर पर रहेंगे ,इस पर नहीं। तो भी बाबा समझ जाते हैं कि डल (हेडेड) है। बच्चों को तो आलराउंड जहां पर सर्विस मिले वहां पर ही लग जाना चाहिए। सेंटर छोड़कर और जगह (जाओगी) तो क्या तुम्हारे बिना ढेर हो जावेंगे?आपस में ही क्लास नहीं चला सकते हैं तो बाकी क्या? तो सीखा और क्या किया?विघ्न भी अनेक प्रकार के पड़ते हैं ना।अबलाओं पर कितने प्रकार के अत्याचार देख के .....होते रहते हैं।यह भी गाया हुआ है।हर एक बात में बड़ी समझ चाहिए।तुम कोई को भी खुदा का परिचय देकर काम निकाल सकते हो।खुदा है उंच ते उंच। उनको ही पतित–पावन रहमदिल कहा जाता है। वो ही (बहिश्त) में ले जाने वाला है। वो अल्लाह कहते हैं मुझे याद करो तो तुम मेरे पास आ जावेंगे। इस दुनियां से छूटने के लिए ही अल्लाह को याद करते हैं। सतयुग में तो जो.....की स्थापना है वो तो अल्लाह को याद ही नहीं करते हैं। यहां शैतानी राज्य में सब अल्लाह को याद करते हैं।उल्टा ही रास्ता बताने वाले नम्बरवन शैतान हैं। सदगति करने वाले भगवान के लिए कह देते हैं कि कुत्ते–बिल्ले सबमें परमात्मा है। तो उल्टा ही तो रास्ता बताते हैं ना। इसलि ही उनका नाम .....रखा है। यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। बुद्धि में भी नम्बरवार ही बैठता ही है। जो समझते होंगे वो तो फिर दूसरों को भी समझावेंगे। ओम।